

# डॉ. नट हेम, नीतिवचन, व्याख्यान 3, प्रभु का भय

© 2024 नॉट हेम और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नट हेम हैं। यह सत्र संख्या तीन है, प्रभु का भय, नीतिवचन 1:7 और 9:10।

नीतिवचन की बाइबिल पुस्तक पर तीसरे व्याख्यान में आपका स्वागत है।

याद रखें व्याख्यान दो में हम पुस्तक का परिचय देख रहे थे, शुरुआती अध्याय में श्लोक एक से छह तक, और मैंने पहले ही श्लोक सात का संक्षेप में संदर्भ दिया था, एक सर्वोत्कृष्ट कहावत, और कई मायनों में इसके संबंध में हर चीज का सारांश नीतिवचन, बुद्धि और विश्वास की पुस्तक। और मैं इसे अब फिर से पढ़ने जा रहा हूँ, और श्रृंखला के इस तीसरे व्याख्यान में, हम लगभग विशेष रूप से इस विशेष कविता और कुछ अन्य संबंधित छंदों की व्याख्या पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो विशेष रूप से भगवान के भय का उल्लेख करते हैं। और इस विशेष व्याख्यान का उद्देश्य वास्तव में कुछ प्रमुख ग्रंथों की सहायता से यह पता लगाना है कि भगवान का भय वाक्यांश का अर्थ क्या है, और फिर इसे बौद्धिक उद्यम के संबंध में लागू करना है जो कि पुस्तक का अध्ययन है कहावतों का।

तो अब हम शुरू करें। श्लोक सात मैंने फिर से पढ़ा, प्रभु का भय ज्ञान की शुरुआत है। मूर्ख बुद्धि और शिक्षा का तिरस्कार करते हैं।

मुझे बस उसे फिर से दोहराने दो। भगवान का भय ज्ञान की शुरुआत है। मूर्ख बुद्धि और शिक्षा का तिरस्कार करते हैं।

एक या दो क्षण में, हम इस संपूर्ण श्लोक को देखेंगे, लेकिन अभी, मैं सबसे पहले प्रभु के भय वाक्यांश पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ। फिर मैं उस शब्द के अर्थ को देखने जा रहा हूँ जिसका अनुवाद शुरुआत, ज्ञान की शुरुआत है, और फिर हम उस कविता के दूसरे भाग में सच्चे ज्ञान, ज्ञान और भगवान के भय के विरोधाभास को देखेंगे। तो हम इसे इसी तरह करने जा रहे हैं।

तो, प्रभु के भय का क्या अर्थ है? ठीक है, अगर हम इसे शाब्दिक रूप से लेते हैं, जैसे तो मैं सुझाव दे रहा हूँ कि हमें नहीं करना चाहिए, और मैं इसे एक मिनट में समझाऊंगा, लेकिन अगर हम इसे शाब्दिक रूप से लेते हैं तो इसका मतलब है कि भगवान से डरना है। और अगर हम इसे इस तरह से लें और शाब्दिक रूप से लें तो भगवान की जो छवि हमारे यहां होगी, वह 20वीं सदी या 21वीं सदी के पश्चिमी शिक्षक की नहीं होगी, जहां स्कूल में शारीरिक दंड अवैध है, लेकिन हम शायद ऐसा करेंगे ईश्वर की कल्पना एक बड़ी छड़ी के साथ एक बहुत सख्त शिक्षक के रूप में करें, जिसे 1930 के दशक में यूरोप में भी मेरे माता-पिता जानते और अनुभव करते थे, जिन्हें स्कूल में उनके बहुत सख्त शिक्षकों द्वारा नियमित रूप से शारीरिक दंड दिया जाएगा। तो फिर विचार यह होगा कि ईश्वर एक सख्त प्रकार का माता-पिता-शिक्षक है जो हमारे हर छोटे से गलत

काम के लिए हमारी कलाई पर थप्पड़ मारेगा और इसलिए बेहतर होगा कि हम वही सीखें जो वह हमसे सीखना और अध्ययन करवाना चाहता है।

अब क्या मैं सुझाव दे सकता हूँ कि यह प्रभु के भय के वाक्यांश के प्रति पूरी तरह से गलत दृष्टिकोण है और अब मैं इसे थोड़ा और अधिक समझाने की कोशिश करने जा रहा हूँ। तो सबसे पहले मैं यह कहना चाहता हूँ और फिर तर्क देना चाहता हूँ, और यह उचित ठहराना चाहता हूँ कि यह वाक्यांश भगवान का भय एक तथाकथित मुहावरा है और एक मुहावरा वास्तव में शब्दों का एक संयोजन है इस तरह से कि शब्द शब्दों की एक श्रृंखला के रूप में हैं उस अनुक्रम का मतलब कुछ और नहीं बल्कि मुहावरेदार वाक्यांश के अलग-अलग शब्दों के अर्थ के योग से कुछ अलग है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत है।

मैं आपको मुहावरों के कुछ उदाहरण देता हूँ ताकि आपको यह समझने में मदद मिल सके कि इससे मेरा क्या मतलब है। उदाहरण के लिए, यदि मैं एक शिक्षक हूँ और मैंने आपको क्वॉंटम भौतिकी के बारे में कुछ सिखाने की कोशिश की है और फिर मैं अचानक अपने आप को बीच में रोकता हूँ और कहता हूँ कि मुझे आशा है कि आपने ध्यान दिया होगा और आप मेरी बात को समझने में सक्षम होंगे। क्या तुमने मेरा बहाव पकड़ लिया है? यह एक मुहावरा है।

अब मुझे कोई अंदाज़ा नहीं है कि इस संबंध में भटकाव क्या है। क्या इसमें मुझे बर्फ की ढलान पर बहते हुए स्लेज पर बैठे हुए दिखाया गया है या मैं किसी नदी या समुद्र में तैरते हुए बह रहा हूँ और आप मेरे बहाव को कैसे पकड़ेंगे? वह किस प्रकार की पकड़ होगी? नहीं, मुहावरेदार वाक्यांश कैच माई ड्रिफ्ट का अर्थ है कि क्या मैं तुम्हें जो सिखा रहा हूँ उसका गहरा महत्व समझ गया है? क्या तुमने मेरा बहाव पकड़ लिया? अब 'कैच माई ड्रिफ्ट' वाक्यांश में जो कुछ भी मैं आपको सिखाने की कोशिश कर रहा हूँ उसकी गहरी समझ प्राप्त करने से कोई संबंध नहीं है।

मुहावरा यही करता है। यही बात प्रभु के भय वाक्यांश के साथ भी सच है। और अब मैं आपको जो सुझाव देना चाहता हूँ वह यह है कि भगवान का डर एक मुहावरा है जो भगवान में आज्ञाकारी विश्वास व्यक्त करने की कोशिश करता है।

मैं ईश्वर पर उस आज्ञाकारी विश्वास को दोहराता हूँ। तो, भगवान के डर का मतलब भगवान से डरना नहीं है, बल्कि भगवान के साथ एक सकारात्मक, भरोसेमंद रिश्ता रखना है, जो तब सकारात्मक रूप से प्रेरित आज्ञाकारिता की ओर ले जाता है, डर से नहीं बल्कि विश्वास से प्रेरित होता है। अब मैं एक मुख्य अंश की ओर मुड़ने जा रहा हूँ जो मुझे लगता है कि इसे बहुत अच्छी तरह से समझाता है।

और यह मार्ग वास्तव में मिस्र में बंधन से इज़राइल के लोगों की मुक्ति के लिए भगवान के पलायन के अंत में सिनाई में भगवान के आत्म-प्रकटीकरण के संदर्भ से है। और हम सभोपदेशक की पुस्तक के अध्याय 18 को देख रहे हैं। और बस एक पल।

क्षमा करें, अध्याय 18 नहीं। हम निर्गमन की पुस्तक के अध्याय 20 को देख रहे हैं। अध्याय 20 में क्या होता है कि ईश्वर स्वयं को होरेब पर और वह सिनाई पर प्रकट होता है।

और लोग परमेश्वर को उसके समस्त वैभव, ऐश्वर्य, पवित्रता और शक्ति में देखते हैं। यह बहुत ही सामान्य रूप से वर्णित थियोफनी है, ईश्वर के अस्तित्व के तरीकों में ईश्वर की उपस्थिति जो कान, आंख, शायद नाक और संभावित रूप से स्पर्श जैसी मानवीय इंद्रियों के माध्यम से समझ में आती है। और होता यह है कि परमेश्वर के साथ इस पहली मुलाकात के बाद लोग, यहाँ तक कि उन लोगों के बुजुर्ग भी डर जाते हैं जो मूसा के साथ पहाड़ पर परमेश्वर से मिले थे।

और वे अब जाकर मूसा से कहने लगे, हे मूसा, परमेश्वर कल फिर हम से मिलना चाहता है। लेकिन हम डरते हैं। हम डरे हुए हैं।

हम भयभीत हैं। और हम सोचते हैं कि यह एक बेहतर विचार है यदि आप स्वयं हमारे प्रतिनिधि के रूप में जाएं और आप भगवान से बात करें और फिर भगवान आपको बता सकते हैं कि वह हमें क्या बताना चाहते हैं और आप पहाड़ से वापस आकर हमें बता सकते हैं। तो यहाँ हमारे पास लोगों के ईश्वर से डरने का एक स्पष्ट संदर्भ है।

वे परमेश्वर की अवज्ञा नहीं करना चाहते। वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहते हैं, लेकिन वे परमेश्वर से इतना डरते हैं कि वे परमेश्वर से आमने-सामने मिलना नहीं चाहते हैं, लेकिन वे एक मध्यस्थ भेज रहे हैं। और इसलिए, फिर अगले दिन, मूसा वास्तव में परमेश्वर से मिलने के लिए अकेले ही पहाड़ पर चढ़ गया।

और निम्नलिखित बातचीत शुरू होती है। मैंने पद 18 से पढ़ा। जब सब लोगों ने गरजन और बिजली, नरसिंगे का शब्द, और पहाड़ को धुआं उठते देखा, तो वे डर गए, और कांप उठे, और दूर खड़े होकर मूसा से कहा, तू हम से बातें कर, और हम सुनेंगे। परन्तु परमेश्वर को हम से बोलने न दे, नहीं तो हम मर जाएंगे।

मूसा ने लोगों से कहा, मत डरो, क्योंकि परमेश्वर केवल तुम्हारी परीक्षा करने, और तुम पर अपना भय बैठाने के लिये आया है, कि तुम पाप न करो। क्या आपको वह मिला? मुझे इसे दोबारा पढ़ने दीजिए। मूसा यही कहता है।

मत डरो, क्योंकि परमेश्वर केवल तुम्हारी परीक्षा करने, और तुम में अपना भय उत्पन्न करने के लिये आया है, कि तुम पाप न करो। तो, यहाँ जो हो रहा है वह सिनाई पर्वत पर ईश्वर और उसके लोगों के बीच महान वाचा, सिनाई या सिनाईटिक वाचा की बातचीत की शुरुआत का क्षण है। लोग परमेश्वर से डरते हैं क्योंकि परमेश्वर उन्हें बताने वाला है कि वह उनसे क्या करवाना चाहता है।

और जब उन्होंने मूसा को भेजा, तब मूसा ने लोगों को बताया कि परमेश्वर उनसे क्या चाहता है। और वह कहता है, मत डरो, परन्तु परमेश्वर चाहता है, कि तुम उसका भय मानो। तो, इस वाक्यांश में, आतंक या चिंता या भयभीतता या चिंता के अर्थ में भय की तुलना ईश्वर के भय से की जाती है।

और फिर अगला वाक्यांश ईश्वर के भय की प्रकृति को स्पष्ट करता है जिसे ईश्वर उन पर थोपना चाहता है। और यही है, मैं पूरी कविता फिर से पढ़ूंगा ताकि आप इसे इसके संदर्भ में पकड़ सकें।

मत डरो, क्योंकि परमेश्वर केवल तुम्हारी परीक्षा करने, और तुम पर अपना भय रखने के लिये आया है, और उसकी बाट जोहते रहो, कि तुम पाप न करो।

और फिर ईश्वर ने इस्राएल के लोगों पर वाचा, वाचा की शर्तों, आज्ञाओं आदि को प्रकट किया और उनसे ईश्वर के महान मुक्तिदायक बचत कार्यों के जवाब में स्वैच्छिक आज्ञाकारिता की वाचा में प्रवेश करने के लिए कहा जो ईश्वर ने उनके लिए किया था। उन्हें बंधन से बाहर लाने में। ईश्वर अब चाहता है कि वे उस पर भरोसा करें, चिंता और भय के कारण नहीं, बल्कि विश्वास और कृतज्ञता के कारण। और फिर स्वेच्छा से, स्वतंत्र रूप से अपने हृदय की गहरी दिशा से, डर से नहीं, बल्कि इसलिए कि ऐसा करना सही काम है, ईश्वर का आज्ञापालन करें।

तो यह संक्षेप में है कि मैं प्रभु के भय की व्याख्या कैसे करता हूँ। बेशक, मैं यह कहकर नहीं आया हूँ कि हमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा नहीं रखनी चाहिए और मैं यह भी नहीं कह रहा हूँ कि कभी-कभी ईश्वर से डरना उचित नहीं है क्योंकि ईश्वर वास्तव में एक बहुत शक्तिशाली प्राणी और बहुत पवित्र प्राणी है। और मुझे नहीं लगता कि जिस तरह से हम भगवान के साथ बातचीत करते हैं, उसमें हमें निंदा करनी चाहिए। मेरा मानना है कि ईश्वर के साथ बातचीत करने का उचित तरीका श्रद्धा, विस्मय, आश्चर्य, गहरी विनम्रता और कभी-कभी बिल्कुल उचित रूप से अपनी कमियों, अपनी सीमाओं, अपने अपराध बोध और शायद कभी-कभी अपने पापों का एहसास करना है। ज़िंदगियाँ।

और फिर उचित तरीका, निश्चित रूप से, डर और कांप के साथ भगवान से क्षमा मांगना है क्योंकि हमें मसीह की बहुत महंगी और दर्दनाक मौत के माध्यम से हमारे पापों की क्षमा में भगवान की महान और महंगी दया को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए। पार करना। लेकिन प्रभु के भय का मतलब यह नहीं है। भगवान का डर भगवान के साथ एक भरोसेमंद रिश्ते के बारे में है जो स्वाभाविक रूप से, भगवान के साथ उस रिश्ते के प्राकृतिक बहिर्वाह के रूप में, एक ईश्वरीय जीवन की ओर ले जाता है।

और यदि आप इसके बारे में सोचते हैं, तो हमारे पास वास्तव में एक आधुनिक मुहावरा है जो यहूदियों या ईसाइयों, आधुनिक यहूदियों या ईसाइयों के बारे में बात करने के लिए मुहावरेदार तरीके से, प्रभु से डरो, इस वाक्यांश का उपयोग करता है, जिन्हें हम उनके विश्वास और विश्वास में अनुकरणीय लोग मानते हैं। उनका आचरण. और हम उन लोगों के बारे में बात करते हैं जिन्हें हम अपने लिए या अपने आस-पास के अन्य लोगों के लिए उदाहरण मानते हैं और हम उनके बारे में बात करते हैं और हम कहते हैं, अमुक महिला इतनी अद्भुत है। वह वास्तव में वह व्यक्ति है जो प्रभु से डरता है।

वह ईश्वर से डरने वाली महिला है या वह ईश्वर से डरने वाला पुरुष है। और जब हम ऐसे किसी व्यक्ति के बारे में बात करते हैं, तो मैं आपसे शर्त लगाता हूँ, अगर आपने कभी किसी को किसी और के बारे में बताते सुना है जिसे वे ईश्वर से डरने वाली महिला या ईश्वर से डरने वाले पुरुष के रूप में वर्णित करते हैं, या आप स्वयं किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो एक है ईश्वर से डरने वाला पुरुष या ईश्वर से डरने वाली महिला, आप कभी भी उनकी कल्पना नहीं करते हैं और वे कभी भी उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित नहीं करते हैं जो डर से प्रेरित है। लेकिन, मैं

आपसे शर्त लगाता हूं, आप किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचेंगे जो स्वाभाविक रूप से अपने विश्वास को एक अनुकरणीय तरीके से, प्राकृतिक तरीके से और इस तरह से जीता है जो भगवान के प्रति गहरी भक्ति और एक आज्ञाकारी जीवन शैली, उदारता की एक अनुकरणीय जीवन शैली को दर्शाता है। अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम, कमज़ोर लोगों की देखभाल इत्यादि।

प्रभु का भय बिल्कुल यही है। अब इस वाक्यांश में महत्वपूर्ण बात, जो स्पष्ट रूप से नीतिवचन की पुस्तक में एक महत्वपूर्ण बात है, वह यह है, वह है, और मैंने इसे पहले अध्याय के श्लोक दो और तीन में कहा था, यह पुस्तक एक व्यावहारिक पुस्तक है। तो इस पुस्तक में जिस विश्वास को बढ़ावा दिया जा रहा है वह स्वाभाविक रूप से एक आज्ञाकारी जीवनशैली का नेतृत्व करना चाहिए जो भगवान का सम्मान करता है और स्वाभाविक रूप से अन्य लोगों के कल्याण में योगदान देता है।

तो, भगवान का डर भगवान के साथ रिश्ते के साथ-साथ व्यावहारिक, आज्ञाकारी और जीवन देने वाली, जीवन-निर्वाह करने वाली, जीवन को बढ़ाने वाली कार्रवाई के साथ हमारी अपनी जीवनशैली में, हमारी दैनिक बातचीत में और हम दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं, दोनों के साथ जुड़ा हुआ है। लोग। प्रभु का भय यही है। और इसलिए, उसी के अनुरूप, अब मुझे अध्याय एक, श्लोक सात फिर से पढ़ने दीजिए।

भगवान का भय ज्ञान की शुरुआत है। तो, नए संशोधित मानक संस्करण में शुरुआत शब्द का जो भी अनुवाद किया गया है, उसका जो भी अर्थ है, जिसे हम एक पल में समझेंगे, स्पष्ट रूप से भगवान के साथ व्यक्तिगत संबंध के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है जो व्यावहारिक, आज्ञाकारी परिणाम की ओर ले जाता है। यही ज्ञान का बहुत महत्वपूर्ण पहलू है।

यह कोई धर्मनिरपेक्ष चीज़ नहीं है, यह एक धार्मिक चीज़ है, लेकिन यह ऐसी चीज़ है जो दायित्व के बजाय रिश्ते से आती है। अब आइए यहां से शुरू होने वाले अनुवादित शब्द के अर्थ की ओर मुड़ें। यह चर्चा के लायक क्यों है और यदि आप वास्तव में विभिन्न बाइबिल अनुवादों को देखते हैं, तो आप देखेंगे कि कई अलग-अलग अनुवाद हैं और कई टिप्पणियों में इसकी अलग-अलग व्याख्याएं हैं, क्योंकि यहां फिर से हमारे पास है भाषण का एक और अलंकार क्योंकि हिब्रू में ज्ञान की शुरुआत के लिए शब्द रेशीत है होख्मा, और रेशिट एक तरह का हिब्रू शब्द है जो रोश से लिया गया है जिसका अर्थ है सिर।

तो शाब्दिक रूप से श्लोक सात कहता है कि प्रभु का भय ज्ञान का प्रमुख है, और इसे ही हम आमतौर पर रूपक कहते हैं। बुद्धि के मुखिया का क्या अर्थ है? इसका मतलब यह नहीं है कि यहां ज्ञान का मानवीकरण किया गया है, हालांकि ज्ञान को बाद में नीतिवचन की पुस्तक में मानवकृत किया जाएगा, लेकिन सिर शब्द का उपयोग यह समझाने के लिए एक रूपक के रूप में किया जाता है कि इसका ज्ञान के कुछ विशेष पहलू से लेना-देना है। और अब मैं आपको नीतिवचन की पुस्तक पर ब्रूस वाल्टके की बेहतरीन टिप्पणी का एक संक्षिप्त खंड फिर से पढ़ूंगा।

रेशिट शब्द की अपनी व्याख्या को उचित ठहराता है होखमाह, ज्ञान का प्रमुख है, और वह इसे शुरुआत के रूप में एनआरएसवी के साथ भी अनुवादित करता है, और अब वह इसे इसी तरह

समझाता है। शुरुआत या पुनः का अर्थ हो सकता है, और फिर वह तीन अर्थ देता है, अस्थायी रूप से पहली बात का मतलब हो सकता है। तो, ज्ञान की पहली चीज़ प्रभु का भय है।

या इसका मतलब यह हो सकता है, वह कहते हैं, गुणात्मक रूप से मुख्य बात। इसका मतलब है कि बुद्धि के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात प्रभु का भय है। और फिर तीसरी या दार्शनिक दृष्टि से, इसका मतलब शायद प्रमुख चीज़, प्रमुख चीज़ या सार हो सकता है।

फिर वह कहते हैं कि दूसरा अर्थ भगवान के भय को केवल एक अन्य ज्ञान शिक्षण के रूप में रखता है और अनुमति देता है कि ज्ञान इसके अलावा भी प्राप्त किया जा सकता है। यह धारणा शायद ही इस संदर्भ में फिट बैठती है, जो अभी तक ज्ञान की विशिष्ट सामग्री को बताने से संबंधित नहीं है, बल्कि इसके लिए रास्ता तैयार करने से संबंधित है। और अब यहां वाल्टके द्वारा प्रस्तुत व्याख्यात्मक तर्क का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

वह कहते हैं कि अस्पष्टता, अर्थात् इसका मतलब इन तीनों चीज़ों से हो सकता है, और जिस तरह से अन्य टिप्पणियों ने चार और पांच अर्थ जोड़े हैं, वास्तव में वाल्टके यहां जिन पर चर्चा करते हैं उनमें दो अन्य अर्थ हैं। उनका कहना है कि श्लोक सात की अस्पष्टता को अध्याय नौ, श्लोक दस के समानांतर परिच्छेद में शुरुआत के लिए स्पष्ट शब्द, अर्थात् तहिलत, द्वारा हल किया गया है, जो हमें पहले अर्थ की ओर इशारा करता है। ज्ञान की शुरुआत भगवान का भय है।

तो यही तर्क है। तो, इस जटिल प्रकार की व्याख्या को सारांशित करने के लिए, हमारे पास जो कुछ है वह यह है कि हमारे पास अस्पष्टता है। रेशीत शब्द, बुद्धि का प्रधान, बहुसंयोजक है।

इसके कई तरह के अर्थ हो सकते हैं। वाल्टके ने कम से कम तीन का उल्लेख किया है, लेकिन अन्य में चौथा और पांचवां है, जिसके बारे में मैं इस स्तर पर नहीं जाना चाहता। लेकिन फिर वह एक बहुत पारंपरिक और बहुत बढ़िया व्याख्यात्मक पद्धति का उपयोग करता है जो प्राचीन रब्बी हिलेल तक जाती है, जिन्होंने उन दिनों भी तर्क दिया था कि धर्मग्रंथों में अस्पष्ट अंशों की व्याख्या अधिक प्रसिद्ध, कम अस्पष्ट के अनुरूप की जानी चाहिए। कम अस्पष्ट, और अधिक स्पष्ट मार्ग।

और जैसा कि होता है, जैसा कि ब्रूस वाल्टके ने ठीक ही पहचाना है, नीतिवचन के अध्याय नौ में, श्लोक दस में, हमारे पास वास्तव में एक समान अभिव्यक्ति है जो अस्पष्ट नहीं है, जो बिल्कुल स्पष्ट और स्पष्ट है। और मैं अब उसे आपको पढ़कर सुनाऊंगा। तो, यह नीतिवचन की पुस्तक, अध्याय नौ, पद दस से है।

यह कहता है, प्रभु का भय बुद्धि की शुरुआत है, और पवित्र का ज्ञान अंतर्दृष्टि है। और यहाँ हिब्रू में शुरुआत के लिए शब्द तेहिलाह शब्द है, या निर्माण तेहिलात में। और तहिला, इसके बारे में कोई सवाल नहीं है, हिब्रू शब्द तहिला का मतलब शुरुआत है।

तो, यह तर्क ब्रूस वाल्टके द्वारा प्रस्तुत किया गया है, वे कहते हैं, ठीक है, अध्याय एक, छंद सात में, वाक्यांश, भगवान का भय ज्ञान का प्रमुख है, अस्पष्ट है, हम वास्तव में नहीं जानते हैं, और यह एक समस्या है। और हम संभवतः सही उत्तर कैसे पा सकते हैं? आह, लेकिन शुक्र है, हमारे पास

अध्याय नौ, श्लोक दस है, जो काफी समान है, यह एक समान वाक्यांश है। और एक और शब्द है जिसका मतलब साफ़ है शुरुआत।

तो, इसका मतलब यहीं से शुरुआत भी होनी चाहिए। और ईमानदारी से कहें तो, यह एक बहुत ही सामान्य तर्क है, यह एक बहुत ही ठोस तर्क है, और आधुनिक विद्वानों द्वारा लगभग सार्वभौमिक रूप से इसका पालन किया जाता है। हालाँकि, मैं अब उसके खिलाफ़ बहस करना चाहता हूँ।

लेकिन जैसा कि मैं ऐसा करता हूँ, मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि मैं अल्पसंख्यक स्थिति पर बहस कर रहा हूँ। मुझे लगता है मैं सही हूँ। लेकिन आपको यह समझने की आवश्यकता है कि मैंने आपको इस श्लोक की मुख्य व्याख्या दे दी है।

लेकिन मैं इसकी व्याख्या कैसे करता हूँ, इसके लिए यहां मेरी व्याख्या और मेरा तर्क है। और मैं यह कहना चाहता हूँ कि जब हम नीतिवचन की पुस्तक पढ़ना जारी रखेंगे तो हम जो कुछ भी करेंगे उसके लिए यह वास्तव में महत्वपूर्ण है। मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि हमारे पास क्या है, और यहां मैं इसे अध्याय एक, श्लोक सात, और अध्याय नौ, श्लोक दस की बारीकियों पर वापस लाने से पहले एक व्यापक तर्क देता हूँ।

लेकिन व्यापक तर्क जो मैं प्रस्तुत करना चाहता हूँ, वह यह है कि नीतिवचन की पुस्तक में, अय्यूब की पुस्तक, और स्तोत्र, और गीतों के गीत के समान, साहित्य की एक शैली के रूप में हमारे पास जो है वह कविता है। नीतिवचन की पुस्तक एक काव्यात्मक ग्रन्थ है। यह एक रचनात्मक कलात्मक पाठ है।

यह एक ऐसा पाठ है जो कल्पना से लिखा गया है। और जिस व्यक्ति ने इसे लिखा, मानव लेखक, एक शब्द शिल्पी, एक शब्द कलाकार, एक शब्द वैज्ञानिक, यदि आप चाहें, तो एक रचनात्मक व्यक्ति था जिसने विश्व साहित्य का एक काव्यात्मक अंश लिखा है, जिसमें अध्याय एक, छंद सात भी शामिल है। इसके अलावा, निःसंदेह, न केवल वह, बल्कि बाइबिल के सिद्धांतों में बाइबिल की पुस्तकों का दिव्य लेखक, लेकिन विशेष रूप से काव्य पुस्तकों में और भी अधिक, पवित्र आत्मा ब्रह्मांड में अंतिम रचनात्मक इकाई है।

तो, मैं आपसे जो कह रहा हूँ वह यह है कि यह पूरी किताब कल्पना से लिखी गई है। और यह मुझे मेरे एक और बहुत सम्मानित सहयोगी, स्पैनिश, कैथोलिक स्पैनिश ओल्ड टेस्टामेंट विद्वान, लुइस अलोंसो शॉकेल के पास लाता है, जिनकी कुछ साल पहले दुखद मृत्यु हो गई थी। वह 20वीं सदी में हिब्रू कविता के महान व्याख्याताओं में से एक थे।

उन्होंने विशेष रूप से स्पैनिश भाषी दुनिया, दुनिया भर के लातीनी विद्वानों को प्रभावित किया है और यह सही भी है, वह एक शानदार, शानदार विद्वान हैं। और उनके प्रमुख प्रकाशनों में से एक में, जिसे ए मैनुअल ऑफ हिब्रू पोएट्री कहा जाता है, मुझे लगता है कि 1984, 1988 में प्रकाशित हुआ, मुझे ठीक से याद नहीं है, इस पुस्तक में उन्होंने तर्क दिया है कि हमें इस बारे में और अधिक कल्पनाशील होने की आवश्यकता है कि हम कैसे जुड़ते हैं सामान्यतः बाइबिल पाठ और

विशेष रूप से काव्यात्मक पाठ। और उन्होंने एक मुहावरा गढ़ा जिसे मैं अक्सर उद्धृत करता हूँ, और अब मैं इसे आपके सामने उद्धृत करने जा रहा हूँ, और जब हम इस व्याख्यान श्रृंखला के माध्यम से आगे बढ़ेंगे तो आप मुझे यह बार-बार कहते हुए सुनेंगे।

और बात ये है कि बस जो कल्पना से लिखा गया है उसे कल्पना से ही पढ़ा जाना चाहिए। क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है, मैं इसे दोहराने जा रहा हूँ। जो कल्पना से लिखा गया है उसे कल्पना से ही पढ़ना चाहिए।

और इसलिए, जो मैं आपसे कहना चाहता हूँ वह यह है कि जब अध्याय 1, श्लोक 7 का लेखक शुरुआत के लिए शाब्दिक शब्द के बजाय एक रूपक, एक काव्यात्मक अभिव्यक्ति का उपयोग करता है, तो उसके ऐसा करने का एक कारण था। वाल्टके और अन्य लोगों का तर्क, हालांकि वे ऐसा नहीं कहते हैं, तात्पर्य यह है कि कलात्मक अभिव्यक्ति, ज्ञान का प्रमुख, एक समस्या है। यह वास्तव में इस अत्यंत महत्वपूर्ण छंद के साहित्यिक उत्पादन में एक कमी है।

और स्पष्ट रूप से कहें तो, हालांकि अधिकांश विद्वान वास्तव में ऐसा नहीं कहेंगे, तर्क के पीछे निहितार्थ यह है कि 1, 7 के लेखक ने गलती की है। उन्होंने पुष्पमय काव्यात्मक अभिव्यक्ति का प्रयोग किया और भयानक अस्पष्टता पैदा करके हम बेचारे पाठकों को भ्रमित कर दिया। और अब हमारे पास यह समस्या है और हम नहीं जानते कि इसका क्या मतलब है।

भगवान का शुक है कि किसी और ने या उसने खुद बाद में अध्याय 9, श्लोक 10 में खुद को सुधारा, और हमें स्पष्ट रूप से बताया कि इसका क्या मतलब है। वास्तव में? वास्तव में? वास्तव में? क्या आप यह नहीं सोचेंगे कि पुस्तक के परिचय में, जहां लेखक हमें यह जानने में मदद करना चाहता है कि पुस्तक तक कैसे पहुंचें और हमें बताता है, यही वह है जो आप सीखने जा रहे हैं, ये ऐसे लोग हैं जिनसे मैं जुड़ना चाहता हूँ पुस्तक के साथ, यह एक प्रकार का व्यावहारिक अनुप्रयोग है जो इससे बाहर आना चाहिए, और ये धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण हैं जो आपके पास होने चाहिए और जब आप उस शैक्षिक उद्यम में संलग्न होने का प्रयास करते हैं जिसे आप शुरू करने जा रहे हैं। क्या आप वास्तव में सोचते हैं कि उस लेखक ने जब अपने परिचय के सबसे महत्वपूर्ण भाग, इस शानदार धार्मिक कहावत, भगवान का डर ज्ञान का रशीत है, पर आते समय उसने जो कहा, उस पर विचार नहीं किया? तुम्हें सचमुच लगता है कि उसने गलती की है? नहीं! अस्पष्ट, बहुभाषी अभिव्यक्ति जो कहती है कि भगवान का डर ज्ञान की शुरुआत है, भगवान का डर ज्ञान के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात है, भगवान का डर ज्ञान का सार है।

वह उन तीनों को एक भाव से कहना चाहता था। यह जानबूझकर की गई अस्पष्टता है। यह एक कमी के बजाय एक संपत्ति के रूप में अस्पष्टता है।

यह सुंदरता है। यह हमारी कल्पना को संलग्न करने के लिए कल्पना से लिखा गया है। ताकि हमें एहसास हो कि ईश्वर के साथ हमारा रिश्ता और कृतज्ञता से आज्ञाकारी होने की हमारी स्वाभाविक इच्छा न केवल ज्ञान की शुरुआत है, न केवल बौद्धिक उद्यम के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात है, बल्कि यह वह सार है जो हमें पहुंचने में मदद करेगा सच्ची ज्ञान शिक्षा का सर्वोच्च लक्ष्य जहां यह हमारे स्वयं का हिस्सा बन जाता है।

ताकि हम इस बौद्धिक उद्यम में एक गहरे धार्मिक, आध्यात्मिक दृष्टिकोण के साथ बुद्धिमानी से संलग्न हों जो उन शैक्षिक उपलब्धियों को प्रतिबंधित करने के बजाय बढ़ाता है जिन तक हम पहुँचने वाले हैं। तो, याद रखें जब आप न केवल इस व्याख्यान श्रृंखला के साथ जुड़ते हैं, बल्कि निश्चित रूप से नीतिवचन की पुस्तक के निरंतर पढ़ने और अध्ययन के माध्यम से, चाहे आप अब जो भी व्याख्यान सुन रहे हों, सार, सबसे महत्वपूर्ण चीज़ और इसकी शुरुआत सभी ज्ञान उद्यम भगवान का भय है। अब मैं उस बात से थोड़ा जुड़ना चाहता हूँ जो मैंने पहले व्याख्यान 1 में कही थी जब मैंने पूरी किताब का परिचय दिया था।

हमने उल्लेख किया है कि एक ओर, नीतिवचन की पुस्तक किसी भी प्रमुख धार्मिक अवधारणा का उल्लेख नहीं करती है जो बाइबिल की लगभग सभी अन्य पुस्तकों में, पुराने और नए नियम दोनों में, अर्थात् वाचा के साथ इतनी महत्वपूर्ण हैं। सिनाई में भगवान, या मंदिर, या पुजारी, या बलिदान, या पलायन। इनमें से किसी का भी नीतिवचन की पुस्तक में उल्लेख नहीं किया गया है, जिसने अतीत में, 20वीं शताब्दी के मध्य में, कुछ विद्वानों को यह तर्क देने के लिए प्रेरित किया था कि नीतिवचन की पुस्तक का ज्ञान एक धर्मनिरपेक्ष ज्ञान है, जो सबसे प्रसिद्ध विलियम मैक द्वारा किया गया था। केन ने 1970 से नीतिवचन पर अपनी ओल्ड टेस्टामेंट लाइब्रेरी टिप्पणी में, जहां उन्होंने बहुत दृढ़ता से तर्क दिया कि ज्ञान साहित्य काफी हद तक धर्मनिरपेक्ष है। इसी तरह, जेम्स क्रेण्डॉक भी-कभी यह कहने के करीब आ जाते हैं।

और ये 20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी की शुरुआत में बाइबिल ज्ञान साहित्य के कुछ महान, बहुत प्रभावशाली विद्वान हैं। अब, यह कहने के बाद, मैंने प्रस्तावना में यह भी कहा कि नीतिवचन की पुस्तक स्वाभाविक रूप से कम महत्वपूर्ण धार्मिक है। यह केवल ईश्वर में विश्वास को हल्के में लेता है।

और मैंने ऐसा क्यों कहा इसका कारण ठीक-ठीक भगवान के भय से संबंधित वाक्यांश हैं, जैसे 1.7 और 9.10 में। और अब मैं आपको इनमें से दो और वाक्यांशों को करने के लिए ले जाना चाहता हूँ, लेकिन और भी बहुत कुछ हैं। वाक्यांश, प्रभु का भय, एक बहुत ही महत्वपूर्ण वाक्यांश है, जो नीतिवचन की पुस्तक में दोहराया जाता है। नीतिवचन की पुस्तक में 915 छंदों में से लगभग 10% में, हम 91 छंदों के बारे में बात कर रहे हैं, मोटे तौर पर, क्या यह सही है? हाँ।

91 छंद ईश्वर के बारे में बात करते हैं या उसका उल्लेख करते हैं या प्रत्यक्ष रूप से या कम से कम स्पष्ट रूप से अप्रत्यक्ष रूप से ईश्वर की ओर संकेत करते हैं। तो, ईश्वर किताब के लगभग हर पन्ने पर है। और प्रभु का भय, यहाँ एक है, अध्याय दो में, जिसके बारे में हम अगले व्याख्यानों में से एक में और अधिक विस्तार से निपटेंगे, कहते हैं, मेरे बच्चे, यदि तुम श्लोक एक में मेरे शब्दों को स्वीकार करते हो, और यदि तुम ज्ञान के बारे में सीखते हो, श्लोक दो से चार, फिर श्लोक पांच में, फिर आप भगवान के भय को समझेंगे, यहां फिर से हमारा शब्द है, हमारा मुहावरा है, और भगवान का ज्ञान पाएंगे।

तो, विडंबना यह है कि, मुझे लगता है, और यहां अब मैं वाल्टके के इस विचार का विस्तार करना चाहता हूँ जिसमें उन्होंने कहा था कि ज्ञान के सिर से संबंधित तीन अर्थ हैं। अध्याय दो, श्लोक

पाँच में, ज्ञान की खोज से भगवान का भय पैदा होता है और, समानांतर वाक्यांश में, भगवान का ज्ञान होता है। तो, अध्याय एक, श्लोक सात में, बुद्धि का प्रमुख भगवान का भय है, यह कहता है कि यह भगवान का भय है जो ऊर्जावान, सक्षम करने वाली विशेषताओं में से एक है जो आपको ज्ञान प्राप्त करने में मदद करेगा।

लेकिन अब, इसके विपरीत, अध्याय दो में, यह दूसरा तरीका है। यह तब होता है जब आप सच्चे ज्ञान के बारे में सीखते हैं, जैसा कि यहां नीतिवचन की पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है, और मैं, एक ईसाई धर्मशास्त्री के रूप में, अथ्यूब की पुस्तक और एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में, समान ज्ञान जोड़ूंगा। पाठ या किसी प्रकार के ज्ञान पाठ, मैं बाद में किसी अन्य व्याख्यान में उस पर वापस आऊंगा। यह भी है, यदि आप इस प्रकार के ज्ञान का अध्ययन करते हैं, तो यह आपको अपने निर्माता, आपके उद्धारक, और आपके उद्धारकर्ता, आपके पालनकर्ता, आपके मार्गदर्शक के व्यक्तिगत ज्ञान के सीधे संबंध में एक आज्ञाकारी, भरोसेमंद जीवन जीने में मदद करेगा।

तो, ज्ञान के प्रमुख का यह विचार ब्रूस वाल्टके और कई अन्य लोगों की तुलना में कहीं अधिक समृद्ध है, जिन्होंने अब तक हमें उनके तर्कों को समझने की अनुमति दी है। अब मैं चाहता हूँ कि हम संक्षेप में अध्याय 15 पर जाएं। यहाँ एक और मुख्य वाक्यांश है, अध्याय 15, श्लोक 33, प्रभु का भय मानना बुद्धि की शिक्षा है, और नम्रता सम्मान से पहले आती है।

अब, इस श्लोक के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन ध्यान दें कि यह अब एक प्रकार की रूपक अभिव्यक्ति है जहां एक ओर भगवान का भय और दूसरी ओर ज्ञान की शिक्षा को एक ही चीज़ बना दिया गया है। प्रभु का भय मानना बुद्धि की शिक्षा है। वे एक और एक ही चीज़ हैं, रूपक रूप से बोलना, शाब्दिक रूप से नहीं बोलना, यह एक ऑन्टोलॉजिकल नहीं है, बिल्कुल दूसरे के समान है, लेकिन रूपक रूप से बोलना, जैसे-जैसे नीतिवचन की पुस्तक विकसित और प्रकट होती रहती है, अब हमें बताया जाता है कि जैसे हम ज्ञान में निर्देश दिए जा रहे हैं या जब हम इस तरह के ज्ञान ग्रंथों का अध्ययन करते हैं, तो हम वास्तव में ईश्वर से डरने वाले पुरुष और महिला होने की प्रक्रिया, गतिविधि और स्थिति में लगे होते हैं।

तो, मैं चाहता हूँ कि आप इसके माध्यम से देखें कि वास्तव में नीतिवचन की पुस्तक पूरी तरह से धर्मशास्त्रीय है और यह अपने धर्मशास्त्र में संबंधपरक है। यह ईश्वर को जानने के बारे में है और यह अपने धर्मशास्त्र में व्यावहारिक है। यह धर्मशास्त्र के बारे में है जो हमारी जीवनशैली में, हमारे मूल्यों में, हमारे निर्णय लेने में, जिस तरह से हम दूसरों के साथ बातचीत करते हैं और आम भलाई में योगदान करते हैं, उसमें बदलाव लाता है।

तो, याद रखें, बुद्धि के लिए प्रभु का भय अत्यंत आवश्यक है।

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नट हेम हैं। यह सत्र संख्या तीन है, प्रभु का भय, नीतिवचन 1:7 और 9:10।